RAS MAINS TEST SERIES 2018

PAPER –III GENERAL KNOWLEDGE AND GENERAL STUDIES

Unit-II - **Public Administration**

नोटः सभी प्रश्नों के उत्तर दें। निम्न प्रश्नों का उत्तर 15-15 शब्दों में दें। प्रत्येक प्रश्न के 2 अंक निर्धारित है।

1. प्रतिवेदन से क्या तात्पर्य हैं ?

उत्तरः– प्रतिवेदन का आशय अधीनस्थों द्वारा एक निश्चित समय में किये गये कार्यों की रूपरेखा के विवरण को अधिकारियों को सौंपे जाने की प्रक्रिया से हैं।

2. टेलर के अनुसार संगठन की समस्याओं को संक्षेप में लिखिए ?

उत्तरः– टेलर के अनुसार संगठन में कार्य विभाजन व मानकीकरण न होना, कर्मचारियों की वैज्ञानिक रूप से भर्ती, चयन, प्रशिक्षण एवं विकास का अभाव, कार्य-कर्त्ता, प्रबंधक-श्रमिकों में समन्वय का अभाव जैसी समस्याएँ होती थी।

3. प्रबंधन का जनक/पिता किसे कहा जाता हैं ?

उत्तरः– हेनरी फेयोल को प्रबंधन का जनक कहा जाता हैं। इन्होंने प्रबंधन की शास्त्रीय/परम्परागत विचारधारा को स्वरूप दिया।

4. उर्विक द्वारा प्रतिपादित उत्तरदायित्व के सिद्धांत से क्या तात्पर्य हैं ?

उत्तरः– इस सिद्धांत के अनुसार अधिकारियों द्वारा अनिवार्य रूप से अधीनस्थों द्वारा किये गये कार्यों का उत्तरदायित्व लेना चाहिए।

5. चेस्टर बर्नार्ड के अनुसार किस प्रकार का निर्णय श्रेष्ठ माना जाता हैं?

उत्तरः– चेस्टर बर्नार्ड के अनुसार सांगठनिक निर्णय (संगठन के हित में तार्किक व विवेकशील निर्णय) को श्रेष्ठ माना जाता हैं।

6. फॉलेट द्वारा प्रतिपादित शक्ति संबंधी विचार प्रस्तुत करें ?

उत्तरः– फॉलेट के अनुसार कार्य आधारित सत्ता अथवा नियंत्रण शक्ति का अधिक उपयुक्त स्वरूप माना जाता हैं।

7. चामत्कारिक सत्ता को परिभाषित कीजिए ?

उत्तरः– ऐसी सत्ता जो नेता के कारिश्माई गुणों पर अधारित होती है व जिसमें अधीनस्थों का चयन नेता के सम्पर्क पर आधारित होता हैं, चामत्कारिक सत्ता कहलाती हैं। उदाहरण - नेपोलियन

8. मिनोब्रुक सम्मेलन I का क्या महत्व हैं ?

उत्तरः– नव लोक प्रशासन का उद्भव मिनोब्रुक सम्मेलन I (1968) के परिणामस्वरूप हुआ, इसके अतिरिक्त इस सम्मेलन में बेहतर मीडिया प्रबंधन पर भी बल दिया गया।

9. नव लोक प्रबंधन के मुख्य उद्देश्य क्या हैं ?

उत्तरः– प्रशासन में कार्यकुशलता, मितव्ययता व प्रभावशीलता के माध्यम से नागरिकों को गुणवत्तापूर्ण सेवाएँ उपलब करवाना नव लोक प्रबंधन का मुख्य उद्देश्य हैं।

10. नवटेलरवाद से क्या तात्पर्य हैं ?

उत्तरः– नव लोक प्रबधंन से संबंधित अवधारणा जिसके अन्तर्गत उदारीकरण, निजीकरण, वैश्वीकरण जैसी प्रक्रियाओं के माध्यम से प्रशासन में कार्यकुशलता, मितव्ययता व प्रभावशीलता का समावेश करना सम्मिलित हैं।

11. नियंत्रण को परिभाषित कीजिए ?

उत्तरः– लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु नियमों की अनुपालना सुनिश्चित कर त्रुटियों में सुधार लाकर विचलन रहित बनाने की प्रक्रिया नियंत्रण कहलती हैं।

12. लोक प्रशासन व निजी प्रशासन में अंतर कीजिए ?

लोक प्रशासन	निजी प्रशासन
☞ क्षेत्र-व्यापक व जटिल	☞ क्षेत्र-सीमित व समरूप
☞ जनहित केन्द्रित	☞ लाभ के तत्व पर केन्द्रित
☞ व्यवहार की एकरूपता	☞ अवसरवादिता की संभावना
☞ जन जवाबदेही	☞ अधिकारी के प्रति उत्तरदायित्व

13. ब्लेक्सबर्ग में मेनिफेस्टा क्या हैं ?

उत्तरः- यह एक घोषणा पत्र है (1983) जिसमें प्रतिनिधित्व की समस्या (कम लोगों द्वारा चुनाव) पर बल दिया व लोक सेवकों को मूल्यों की शपथ दिलवाने का सुझाव दिया गया।

14. नोलन समिति द्वारा प्रतिपादित नैतिकता संबंधी सिद्धांत लिखिए ?

उत्तरः- नोलन समिति द्वारा नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देने हेतु 7 सिद्धांतों- निस्वार्थता, सत्यनिष्ठा, वस्तुनिष्ठता, जवाबदेहिता, पारदर्शिता, ईमानदारी व नेतृत्व की अनुपालना का सुझाव दिया गया।

15. फुल्टन समिति पर टिप्पणी कीजिए ?

उत्तरः- ब्रिटेन की फुल्टन समिति द्वारा लोक सेवाओं में विशेषज्ञों की भूमिका को बेहतर बनाने, इनका व्यावसायीकरण करने व सामान्यज्ञों व विशेषज्ञों में अनुपूरक संबंध स्थापित करने का सुझाव दिया गया।

16. अतारांकित प्रश्न क्या होते हैं ?

उत्तरः- सामान्यतः लिखित प्रवृत्ति के प्रश्न जिन पर अनुपूरक प्रश्न नहीं पूछे जा सकते हैं, अतारांकित प्रश्न कहलाते हैं।

17. शून्यकाल से क्या आशय हैं ?

उत्तरः- 1960 के दशक से मीडिया द्वारा प्रचारित शब्द हैं जो प्रश्नकाल के ठीक बाद के समय को सन्दिर्भित करता है व जिसमें जनहित के मुद्दों को बिना किसी पूर्व सूचना के उठाया जाता हैं।

18. स्थगन प्रस्ताव क्या होता हैं ?

उत्तरः- संसद सत्र के दौरान किसी महत्वपूर्ण घटना अथवा अपरिहार्य लोकहित के मामले पर सरकार का दैनिक काम काज रोककर ध्यान आकृष्ट करने हेतु न्यूनतम 50 सदस्यों द्वारा समर्थित प्रस्ताव स्थगन प्रस्ताव हैं।

19. प्राक्कलन समिति से क्या आशय हैं ?

उत्तरः- 1950 से प्रतिवर्ष स्थापित होने वाली तीस सदस्यीय संसदीय समिति जिसका उद्देश्य बजट को मितव्ययी, कार्यकुशलता व प्रभावी बनाना हैं, प्राक्कलन समिति हैं।

20. न्यायिक सक्रियता को परिभाषित कीजिए ?

उत्तरः-विधायिका/प्रशासन द्वारा नियम अथवा संविधान सम्मत कार्य न करने पर न्यायपालिका द्वारा अपने क्षेत्र को लांघकर प्रशासन को उत्तरदायित्व बनाते हुए जनहित व संवैधानिक गरिमा को सुनिश्चित करना ही न्यायिक सक्रियता हैं।

नोटः सभी प्रश्नों के उत्तर दें। निम्न प्रश्नों का उत्तर 50-50 शब्दों में दें। प्रत्येक प्रश्न के 5 अंक निर्धारित है।

21. लोक प्रशासन से क्या आशय हैं ? इसके उद्भव के कारणों का उल्लेख कीजिए।

उत्तरः-लोक प्रशासन का प्रारम्भ नीति निर्माण व क्रियान्वयन में सहायतार्थ हुआ। सर्वप्रथम 1857 में वुडरो विल्सन ने 'द स्टडी ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन' में राजनीति-प्रशासन द्विभाजन पर बल दिया जो लोक प्रशासन के उद्भव का प्रमुख कारण रहा। अन्य कारणों में नीति निर्माण के लिए यूरोप में सक्रिय केमरलिस्ट समूह, 1883 में अमेरिका का लोक सेवा सुधार अधिनियम (पेण्डलटन एक्ट), औद्योगिक क्रांति से उत्पन्न समस्याएँ, टेलर की वैज्ञानिक प्रबंधन विचारधारा व प्रबंधन के सिद्धांतों की आवश्यकता प्रमुख हैं।

22. नव लोक प्रशासन की मुख्य विशेषताएँ बताइयें ?

उत्तरः- नव लोक प्रशासन के सिद्धांत प्रशासन में नैतिकता, प्रभावशीलता, परिवर्तन, मूल्यों का समावेश कर अधिक प्रासंगिक बनाने पर बल दिया गया हैं। इसी के साथ नव लोक प्रशासन सामाजिक समानता, जन उन्मुखी तत्वों को प्रोत्साहित करता है। प्रशासन की जवाबदेहिता में वृद्धि, विकेन्द्रीकरण व जन सहभागिता को लक्षित करता हैं। यह एक नवउदारवादी व अधिक संवेदनशील प्रशासन की अवधारणा हैं।

23. लोक प्रशासन की उपयोगिता पर टिप्पणी कीजिए ?

उत्तरः- सरकार की कार्य योजनाओं को व्यावहारिक धरातल पर सफल बनाने का दायित्व लोक प्रशासन पर हैं। लोक नीति के निर्माण, क्रियान्वयन व मूल्यांकन में लोक प्रशासन की महत्वपूर्ण भूमिका हैं। फ्लेगशिप कार्यक्रमों के संचालक व सामुदायिक सेवा प्रदाता के रूप में लोक प्रशासन नागरिकों व सरकार के मध्य का सेतु हैं। जन कल्याण व विकास प्रशासन जैसे कार्य लोक प्रशासन द्वारा ही संपादित किये जाते हैं, इसके अतिरिक्त राजनीतिज्ञों को आवश्यक सुझाव देने का कार्य भी लोक प्रशासन के अन्तर्गत सम्मिलित हैं। इस प्रकार लोक प्रशासन स्थायी तंत्र के रूप में महत्वपूर्ण बहुआयामी भूमिका का निर्वहन करता हैं।

24. रेखा व सूत्र में संभावित द्वन्द्व पर चर्चा किजिए ?

i. सूत्र द्वारा रेखा एजेन्सी के प्राधिकारों में अतिक्रमण।
ii. सूत्र केवल सलाहकारी निकाय है, अतः अप्रायोगिक सुझाव देने की संभावना हैं। सूत्र पर अंतिम उत्तरदायित्व न होने से गंभीरता में कमी हो सकती हैं।

iii. रेखा एंजेसी द्वारा त्रुटियों/असफलताओं के लिए सूत्र पर दोषारोपण की प्रवृत्ति।
iv. रेखा व सूत्र के मध्य भिन्न योग्यता/अनुभव/पृष्ठभूमि के कारण वैचारिक मतभेद।
v. सलाह बाध्यकारी न होने से रेखा एंजेसी द्वारा सूत्र के सुझावों को गंभीरता से न लेने की प्रवृत्ति के कारण द्वन्द्व की संभावना।

25. नवीन लोक प्रशासन (NPA) व नवीन लोक प्रबंधन (NPM) में अन्तर कीजिए ?

उत्तरः- 60 के दशक में अमेरिकी समाज में व्याप्त समस्याओं के सुधार का मसौदा नवीन लोक प्रशासन कहलाया जिसमें मूल्य, प्रासंगिकता, सामाजिक समानता, परिवर्तन व उपभोक्ता केन्द्रण पर बल दिया गया जबकि 90 के दशक में एल.पी.जी., निजी क्षेत्र की चुनौतियों का सामना करने, नागरिकों को बेहतर सेवा देने तथा अस्तित्व में आया जो कार्यकुशलता मितव्ययता व प्रभावशीलता पर बल देता हैं। इस प्रकार नवीन लोक प्रशासन सार्वजनिकता व नैतिकता को महत्व देता है वहीं नवीन लोक प्रबंधन नागरिकों को उत्कृष्ट सेवाएँ प्रदान करने की अवधारणा हैं।

26. प्रशासनिक व्यवस्था में सामान्यज्ञ व विशेषज्ञ विवाद क्या हैं, इसके उपाय स्वरूप क्या प्रयास किये जाने चाहिए ?

उत्तरः-सामान्यज्ञों व विशेषज्ञों के मध्य वरिष्ठता के संदर्भ में विवाद है। सामान्यज्ञ में व्यापक अनुभव व बहुआयामी योग्यताएँ विद्यमान होती हैं, साथ ही विशेषज्ञों अपने क्षेत्र की सम्पूर्ण जानकारी के साथ-साथ व्यावसायिक अभिवृत्ति युक्त होते हैं। इस प्रकार विभिन्न क्रियाओं में समन्वय स्थापित करने हेतु प्रबंधक का सामान्यज्ञ होना अनिवार्य है, वहीं जटिल प्रक्रियाओं में बेहतर निष्पादन हेतु विशेषज्ञ महत्वपूर्ण है। अतः उपाय स्वरूप सामान्यज्ञ व विशेषज्ञ की भूमिका में संतुलित व अतिक्रमण रहित सामन्जस्य स्थापित किया जाना चाहिए। इस संदर्भ में विशेषज्ञों की भूमिका बढ़ाने हेतु I ARC, व II ARC के सुझाव महत्वपूर्ण हैं।

27. "शक्ति भ्रष्ट करती है, पूर्ण शक्ति पूर्णतः भ्रष्ट करती हैं।" टिप्पणी कीजिए ?

उत्तरः- शक्ति के सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार के उपयोग संभव हैं। उत्तरदायित्व के भाव से युक्त शक्ति रचनात्मक अनुशासन के वातावरण निर्मित करती हैं। यही शक्ति व उत्तरदायित्व में समता न होने पर शक्ति का दुरूपयोग संभव हैं। प्रत्येक स्तर पर जवाबदेहिता व सुदृढ़ नियंत्रण के अभाव में दिये गये अधिकारों से स्वच्छंदता की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन मिलता है, जिसके परिणामस्वरूप भ्रष्ट वातावरण का निर्माण हो सकता हैं। अतः शक्ति पर युक्ति युक्त का प्रतिबंध अनिवार्य हैं।

28. राजस्थान में प्रशासन की कमियों को दूर करने के लिए संचार प्रक्रियाओं में किये गये सुधारों की चर्चा कीजिए ?

- ☞ राजस्थान लोक सेवा गारंटी अधिनियम व जनसुनवाई का अधिकार।
- ☞ प्रशासनिक शिकायतों के निवारण हेतु सम्पर्क व सुगम पोर्टल।
- ☞ शाला दर्पण द्वारा विद्यालयों की सूचनाओं को ऑनलाइन उपलब्ध करवाना।
- ☞ आशा सोफ्ट द्वारा स्वास्थ्य सूचनाएँ ऑनलाइन करना।
- ☞ E-औषधी द्वारा दवाइयों की उपलब्धता सुनिश्चित करना।
- ☞ राजवायु एवं, दृष्टि एप।
- ☞ पहचान पोर्टल द्वारा सेवाओं हेतु आवेदन को सुगम बनाना।

29. सचिवालय व निदेशालय में अंतर कीजिए ?

सचिवालय	निदेशालय
i. सूत्र एजेंसी के रूप में कार्य	i. रेखा एजेंसी के रूप में कार्य
ii. मुख्य कार्य नीति निर्माण	ii. मुख्य कार्य नीति क्रियान्वयन
iii. राज्य सरकार की सर्वोच्च प्रशासनिक ईकाई	iii. सचिवालय के अधीन कार्यकारी अंग
iv. प्रशासनिक प्रमुख सामान्यज्ञ सामान्यतः	iv. प्रशासनिक प्रमुख विशेषज्ञ
v. सामान्य प्रयोजन की सेवा से संबंधित	v. तकनीकी सेवा से संबंधित

30. प्रशासनिक विकास का वर्तमान समय में क्या महत्व हैं ?

उत्तरः- प्रशासनिक विकास का आशय प्रशासनिक क्षमताओं के सुदृढ़ीकरण से है, इसके अन्तर्गत संरचनात्मक व प्रक्रियात्मक विकास किया जाता हैं। अतः प्रशासन की कार्यकुशलता, मितव्ययता व प्रभावशीलता में वृद्धि हेतु प्रशासनिक विकास महत्वपूर्ण हैं। प्रशासन में

नवाचार का समावेश कर सुदृढ़ीकरण से नागरिको को समयबद्ध व गुणवत्तापूर्ण सेवाओं को सुनिश्चित करने में प्रशासनिक विकास महत्वपूर्ण है। विकास प्रशासन के एक महत्वपूर्ण अंग के रूप में प्रशासनिक विकास वर्तमान में भी प्रासंगिक बना हुआ हैं।

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दें। निम्न प्रश्नों का उत्तर 100 शब्दों में दें। प्रत्येक प्रश्न के 10 अंक निर्धारित है।

31. संगठन में संबंधित व्यवहारवादी सिद्धांतों का विवरण दीजिए ?

उत्तरः- व्यवहारवादी सिद्धातों में मानवीय अन्तर्सबंधों को प्रशासन का अनिवार्य अंग मानते हुए प्रशासनिक व्यवहार संबंधी अवधारणाओं का प्रतिपादन किया गया है। प्रथम व्यवहावादी विचारक बर्नार्ड ने योगदान प्रतिफल संतुलन द्वारा अधीनस्थों की प्रतिबद्धता में वृद्धि करने का विकल्प सुझाया। इसके अतिरिक्त प्रकृति के आधार पर औपचारिक-अनौपचारिक संगठनों, नेता के गुणों, निर्णयन व संचार संबंधी अवधारणाएँ दी।

फॉलेट ने संगठन को सामाजिक व्यवस्था व प्रशासन को सामाजिक प्रक्रिया माना एवं मतभेद की स्थिति में रचनात्मक संघर्ष का सिद्धांत, आदेश देने के नियम, नेतृत्व का वृत्ताकार व्यवहार व कार्यात्मक सत्ता संबंधी विचार प्रस्तुत कियें। इसी क्रम में मास्लों, हर्जबर्ग, मेकग्रेगर इत्यादि ने संगठन में कार्मिकों की अभिप्रेरणा में वृद्धि करने के उद्देश्य से भिन्न भिन्न सिद्धांत दिये। निर्णय निर्माण प्रक्रिया को प्रभावी बनाने के संदर्भ में हरबर्ट साइमन द्वारा निर्णय निर्माण प्रक्रिया व मर्यादित विवेकशील मॉडल दिये गये। जो वर्तमान में भी अत्यधिक प्रांसगिक हैं। वस्तुतः व्यवहारवादी विचारकों द्वारा संगठन के कार्मिकों के व्यवहार संबंधी विभिन्न आयामों यथा नेतृत्व, संचार, निर्णयन, अभिप्रेरणा इत्यादि का विश्लेषण किया गया ।

32. संगठन से संबंधित विभिन्न सिद्धांतों का विकास क्रम बताइयें ?

परम्परागत विचार
तकनीक व संरचना पर बल प्रबंधन का आधारभूत ढाँचा आर्थिक व भौतिक पक्ष पर बल

1.वैज्ञानिक प्रबंधन सिद्धांत (टेलर-कर्मचारियो का वैज्ञानिक चयन, प्रशिक्षण, कार्यात्मक फॉरमेनशिप इत्यादि)

2. संगठन हेतु फेयोल के 14 सिद्धांत व POCCC की अवधारणा।
3. गुलिक का POSDCORB
4. मैक्स वेबर-नौकरशाही की अवधारणा (शक्ति-सत्ता)

↓

मानव संबंध सिद्धांत
मानवीय पक्ष पर बल
सामाजिक–मनोवैज्ञानिक पक्ष

भागीदारी प्रबंधन अवधारणा
समूह द्वारा मानकीकरण
पर्यवेक्षको की भूमिका

एल्टन मेयो व सहयोगी
हर्ड परिकल्पना
अनौपचारिक समूह व संबंध

↓

व्यवहारवादी सिद्धांत
मानवीय अन्तःसंबंधों पर बल
प्रशासनिक व्यवहार संबंधी तकनीकों का प्रतिपादन
प्रशासनिक प्रक्रिया में नवाचार

1. फॉलेट - रचनात्मक संघर्ष, नेतृत्व का वृत्ताकार व्यवहार, आदेशों का मनोविज्ञान व शक्ति संबंधी अवधारणाँ दी।
3. हरबर्ट साइमन ने मर्यादित विवेकशील निर्णयन प्रतिमान दिया।

2. बर्नार्ड-योगदान प्रतिफल संतुलन प्राधिकार, स्वीकृति, औपचारिक-अनौपचारिक संगठन नेता के गुण निर्णयन व संचार संबंधी अवधारणाएँ दी।
4. मास्लों, हर्जबर्ग, मेकग्रेगर आदि ने अभिप्रेरणा पर बल दिया।

↓

पारिस्थितिकी उपागम, व्यवस्था उपागम

वीडनर व वाल्डो

फ्रेड रिग्स

↓

नव लोक प्रशासन
प्रशासन में सार्वजनिकता व नैतिकता

1960 के दशक में अमेरिकन समाज की समस्याओं को दूर करने के लिए

प्रासंगिकता, मूल्य आधारित प्रशासन, सामाजिक समानता परिवर्तन,लोक/उपभोक्ता केन्द्रित नीतियों पर बल

↓

नव लोक प्रबंधन
उद्यमी सरकार (कार्य–कुशल, दक्ष, प्रभावी)

उद्यमशीलता
लक्ष्योन्मुखी, बाजारोन्मुखी
परिणामोन्मुखी सरकार

पूर्वानुमान वाली उत्प्रेरक सरकार
क्रेताउन्मुखी,समुदायोन्मुखी
प्रतियोगात्मक, विकेन्द्रीकृत सरकार

↓

नागरिकों को उच्च गुणवत्तापूर्ण सेवाएँ

33. नवलोक प्रबधन्धन के महत्व को उल्लेखित कीजिए ?

उत्तरः- 90 के दशक में उदारीकरण, निजीकरण वैश्वीकरण से उपजी चुनौतियों के उपाय स्वरूप नागरिकों को गुणवत्तापूर्ण सेवाएँ उपलब्ध करवाने व उद्यमी सरकार के रूप में नव लोक प्रबधंन अस्तित्व में आया। प्रशासन में मितव्ययता, कार्यकुशलता व प्रभावशीलता के तत्वों का समावेश करने में नवलोक प्रबंधन का विशेष महत्व हैं। इस हेतु उद्यमी सरकार के रूप में प्रशासन में पूर्वानुमान पर बल देते हुए इसे परिणामोन्मुखी, समुदायोन्मुखी, बाजारोन्मुखी, विकेन्द्रीकृत, उत्प्रेरक, लक्ष्योंन्मुखी, प्रतियोगात्मक व क्रेता-उन्मुखी बनाने में नव लोक प्रबंधन की महत्वपूर्ण भूमिका हैं।

नव लोक प्रबंधन में राज्य की अपेक्षा बाजार पर अधिक बल दिया गया व प्रबंधन को तुलनात्मक रूप से स्वायत्त बनाया गया। उदारीकरण, निजीकरण व वैश्वीकरण जैसी घटनाओं से समन्वय स्थापित किया एवं सार्वजनिक-निजी सहभागिता, सीमित ठेका व्यवस्था, मौद्रिक प्रोत्साहन, सूचना क्रांति, नीति की अपेक्षा प्रबधं, उद्यमशीलता, राजकोषीय उत्तरदायित्व इत्यादि को प्रोत्साहन दिया गया जिसके परिणामस्वरूप नागरिकों को उपलब्ध सेवाओं कीगुणवत्ता में वृद्धि हुई। इस प्रकार नव लोक प्रबंधन द्वारा वर्तमान के बदलते परिप्रेक्ष्य में लोक प्रशासन के अनुकूलतम स्वरूप की स्थापना हुई।

34. वेबर के नौकरशाही मॉडल का वर्णन कीजिए ?

उत्तरः- नौकरशाही के जनक मेक्स वेबर के अनुसार नौकरशाही का तात्पर्य नियुक्त किये गये अधिकारियों के समूह से हैं। वेबर द्वारा सत्ता के तीन प्रकार बताये गये- परम्परगत सत्ता, चामत्कारिक सत्ता एवं वैधानिक विवेकशील सत्ता। मेक्स वेबर वैधानिक विवेकशील सत्ता अर्थात् संगठन के नियम, संविधान इत्यादि से प्राप्त सत्ता को सर्वश्रेष्ठ बताते हुए नौकरशाही सिद्धांत में संगठन का आदर्श स्वरूप प्रस्तुत करते हैं।

इस मॉडल के अनुसार संगठन की संरचना पद सोपानिक होनी चाहिए, कार्यों का स्पष्ट विभाजन, लिखित दस्तावेज, स्पष्ट नियम-विनियम, नकदी-भुगतान व्यवस्था, मेरिट पद्धति से चयन व पदोन्नति, लोक व निजी सम्पत्ति में अलगाव, गैर व्यैक्तियता, तटस्थता व अनामता व दलीय भावना होनी चाहिए। इसी क्रम में वेबर ने उपर्युक्त सभी गुणों का मॉडल आदर्श रूप में विघमान होने को युटोपिया बताया। इन सभी गुणों से युक्त किसी संगठन कें मॉडल को वेबर नौकरशाही तंत्र का आदर्श प्रकार कहता हैं। वेबर के इस मॉडल का सार्वभौमिक अनुप्रयोग संभव हैं।

35. एक विषय के रूप में लोक प्रशासन के विकास के विभिन्न चरण लिखिए ?

चरणः1 राजनीति प्रशासन द्विभाजन
- विचारः वुडरो विल्सन व एल.डी. व्हाइट
- प्रशासन का क्षेत्र राजनीति से भिन्न
- लोक प्रशासन के महत्व का प्रचार-प्रसार

राजनीति व प्रशासन में पृथक्करण प्रारंभ

चरणः2 सिद्धांतों के विकास का चरण
- विलोबी- प्रशासन के कुछ सिद्धांत होते हैं।
- फेयोल, गुलिक, उर्विक इत्यादि के सिद्धात प्रतिपादित

प्रशासनिक विकास में सिद्धांतों का प्रतिपादन

चरणः3 सिद्धांतों पर चुनौतियों का चरण
- अनुपस्थितिवाद, उत्पादकता में कमी की समस्याएँ
- मानव संबंध व व्यवहारवादी विचारों का प्रतिपादन
- लोक प्रशासन–विज्ञान के रूप में

संगठनों में विभिन्न समस्याओं का प्रांरभ

चरणः4 अस्तित्व व पहचान पर संकट
- तुलनात्मक लोकप्रशासन
- विकास प्रशासन
- लोक प्रशासन के नये स्वरूप की आवश्यकता अनुभव हुई व नवीन अवधारणाओं का जन्म (एल.पी.जी., सुशासन इत्यादि)

लोक प्रशासन की प्रांसगिकता पर प्रश्न उत्पन्न हुआ

चरणः 5 लोकनीति परिपेक्ष्य
- विचारक–गैबलर, ऑस्ट्रोम इत्यादि
- नवीन लोक प्रबंधन
- परिवर्तन का प्रबंधन
- कॉरपोरेट शासन

लोक प्रशासन में परिपक्वता